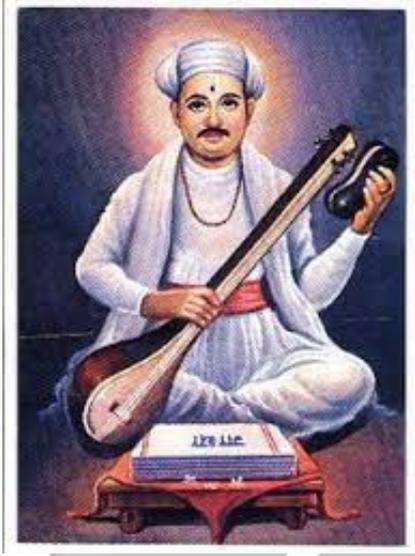


## संत तुकाराम

हाल ही में प्रधानमंत्री ने पुणे ज़िले के मंदिर शहर देहू में संत तुकाराम शाला मंदिर का उद्घाटन किया ।

- शाला मंदिर एक पत्थर के स्लेब (शाला) को समर्पित मंदिर है जिस पर संत तुकाराम ने 13 दिनों तक ध्यान किया ।
  - शाला एक चट्टान को संदर्भित करती है जो वर्तमान में देहू संस्थान मंदिर परिसर में स्थित है और सदियों से पंढरपुर की वार्षिक तीर्थयात्रा **वारी** का प्रारंभिक बिंदु रही है ।
- जिस चट्टान पर उन्होंने 13 दिनों तक बैठकर ध्यान किया, वह पवतिर और वरकरी संप्रदाय के लिये तीर्थस्थल माना जाता है ।



## संत तुकाराम:

- **परिचय:**
  - संत तुकाराम एक वरकरी संत और कवि थे ।
    - यह संप्रदाय पूरे महाराष्ट्र में फैला हुआ है और इसके केंद्र में संत तुकाराम एवं उनके कार्य हैं ।
  - वह अभ्यंग भक्ति कविता और कीर्तन के नाम से उल्लेखनीय आध्यात्मिक गीतों के माध्यम से समुदाय-उन्मुख पूजा के लिये प्रसिद्ध थे ।
  - इसके अलावा उन्होंने अभंग कविता नामक साहित्य की एक मराठी शैली की रचना की, जिसमें आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ लोक कहानियों को सम्मिलित किया गया है ।
- **उनका दर्शन:**
  - तुकाराम ने अपने 'अभ्यंग' साहित्य में चार और लोगों का उल्लेख किया है, जिनका उनके आध्यात्मिक विकास पर बड़ा प्रभाव था- भक्ति संत नामदेव, ज्ञानेश्वर, कबीर एवं एकनाथ ।
  - तुकाराम की शिष्याओं को वेदांत आधारित माना जाता था ।
- **सामाजिक सुधार:**
  - जातिविहीन समाज के बारे में उनके संदेश के परिणामस्वरूप और अनुष्ठानों के इनकार ने सामाजिक आंदोलन को जन्म दिया था ।
  - उनके अभ्यंग, समाज के ब्राह्मणवादी प्रभुत्व के खिलाफ मज़बूत हथियार बन गए ।

## स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

